International Journal of Scientific Modern Research and Technology
(Volume: 14, Issue: 03, Number: 01) Paper ID: IJSMRT- 24030301
ISSN: 2582-8150

ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययनः लिंग–आधारित विश्लेषण और पर्यावरण का प्रभाव

जगत राज पाठक [1], संगीता तिवारी [2], प्रियंका पाठक [3]
[1, 2]आई. ई. एस. कॉलेज ऑफ एजुकेशन, आई. ई. एस विश्वविद्यालय भोपाल
[3]प्रबंधन विभाग, आई. ई. एस. कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी भोपाल

सारांश: यह अध्ययन ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं का तुलनात्मक विश्लेषण करता है, जिसमें लिंग आधारित विश्लेषण और पर्यावरण का प्रभाव परखा गया है। कुल 400 विद्यार्थियों का डेटा एकत्रित कर, उनकी शैक्षिक, सामाजिक, और भावनात्मक क्षमताओं का आकलन किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी छात्राओं का प्रदर्शन ग्रामीण छात्राओं और छात्रों की अपेक्षा कुछ क्षेत्रों में बेहतर था, विशेषकर सकारात्मकता और शैक्षिक क्षमता के मामले में। दूसरी ओर, ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की कुल क्षमता में कोई स्पष्ट सांख्यिकीय अंतर नहीं पाया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि पर्यावरण का विद्यार्थियों की क्षमताओं पर सीमित प्रभाव है, और लिंग के आधार पर कुछ अंतर अवश्य पाए गए।

***How to cite this article**: जगत राज पाठक , संगीता तिवारी , प्रियंका पाठक. (2024).* ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं का तुलनात्मक अध्ययनः लिंग–आधारित विश्लेषण और पर्यावरण का प्रभाव. *International Journal of Scientific Modern Research and Technology (IJSMRT), ISSN: 2582-8150, Volume-14, Issue-03, Number-01, March- 2024, pp.1-3, URL: https://www.ijsmrt.com/wp-content/uploads/2026/09/IJSMRT-24030301.pdf*

Copyright © 2025 by author (s) and International Journal of Scientific Modern Research and Technology Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0)

(http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/)

IJSMRT-24030301

1. प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि क्या ग्रामीण और शहरी परिवेश विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं पर प्रभाव डालते हैं, और क्या लिंग आधारित अंतर इस प्रभाव को प्रभावित करते हैं।

2. साहित्य समीक्षा

शोधकर्ताओं का मानना है कि सामाजिक और शैक्षिक वातावरण व्यक्ति की संज्ञानात्मक क्षमताओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। Wang Y.(2017) ने दर्शाया है कि शहरी विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताएँ अधिक होती हैं। Saxena, A., & Chaturvedi, A. (2018) ने लिंग के आधार पर विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमताओं में अंतर का अध्ययन किया है, जिसमें छात्राओं की बेहतर प्रदर्शन की ओर संकेत किया गया है।

अनुसंधान की सीमाएँ

यह अध्ययन केवल 400 विद्यार्थियों तक सीमित है, जो व्यापक निष्कर्ष निकालने के लिए अपर्याप्त हो सकता है।

अनुशंसाएँ

भविष्य के अध्ययनों में अन्य क्षमताओं को भी शामिल करना चाहिए और शिक्षकों को विद्यार्थियों के लिंग और उनकी क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण विधियों में सुधार करना चाहिए।

3. शोध विधि

जनसंख्या और नमूना चयन

अध्ययन के लिए 200 ग्रामीण और 200 शहरी विद्यार्थियों का चयन किया गया। इनमें प्रत्येक समूह में 100 छात्र और 100 छात्राएँ शामिल थीं।

डेटा संग्रह उपकरण

विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं का आकलन करने के लिए मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

डेटा विश्लेषण विधि

डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण औसत (mean), मानक विचलन (standard deviation), और टी–मूल्य (t&test) के माध्यम से किया गया।

4. परिणाम

(1) ग्रामीण परिवेष के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तलिका क्र.सं.–1. ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन में सार्थक के टी–मान का विश्लेषण

समायोजन घटक	ग्रामीण परिवेश के छात्र N=44		ग्रामीण छात्रा N=56		मानक त्रुटि	टी–मान	पी–मूल्य और महत्व स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
भावनात्मक	4.93	1.57	5.55	1.45	.30	2.06	S
समाजिक	5.40	1.75	5.85	1.74	.35	1.28	N.S
शिक्षात्मक	50.13	2.11	6.08	1.89	.40	2.37	S
कुल समायोजन	15.47	4.52	17.42	4.40	.89	2.19	S

स्वतंत्रता के अंश–98, सार्थकता .05 के स्तर पर 1.97

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि, ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्यमान क्रमशः 15.47 तथा 17.42 प्राप्त हुये है। तथा टी का मान 2.19 प्राप्त हुआ है। जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया है। समायोजन घटक के टी–मान क्रमशः 2.06, 1.28 तथा 2.37 प्राप्त हुये है जिसमें संवेदना तथा शैक्षिक समायोजन .05 स्तर पर सार्थक है। और सामाजिक समायोजन का मान .05 पर असार्थक पाया गया है। कुल समायोजन के मध्यमानों .05 अंतर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अतः हम कह सकते हे कि ग्रामीण छात्राओं का ग्रामीण परिवेश छात्रों से अधिक समायोजन पाया गया है। सामाजिक समायोजन छात्र और छात्राओं का समान पाया गया है। परन्तु संवेदना और शैक्षिक समायोजन छात्राओं का अधिक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

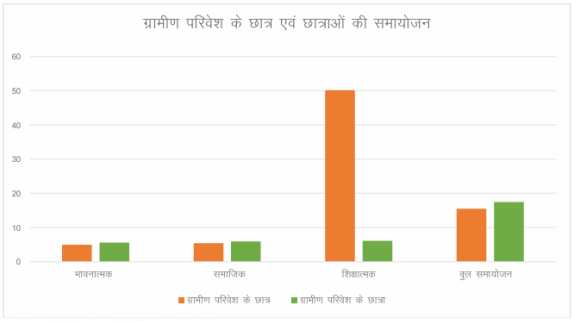

रेखा चित्र क्रमांक 1: ग्रामीण परिवेश के छात्र एवं छात्राओं के कुल समायोजनशीलता का विश्लेषण

(2) शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका क्र.सं.–2. शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राओं की समायोजन में सार्थक के टी–मान का विश्लेषण

समायोजन घटक	शहरी परिवेश के छात्र N=156		शहरी परिवेश के छात्रा N=144		मानक त्रुटि	टी–मान	पी–मूल्य और महत्व स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
भावनात्मक	5.37	1.63	4.85	1.30	.17	3.05	S
समाजिक	6.44	2.30	5.19	1.56	.22	5.68	S
शिक्षात्मक	6.42	2.88	5.31	1.77	.27	4.11	S
कुल समायोजन	18.25	5.58	15.35	4.17	.55	5.27	S

स्वतंत्रता के अंश–298, सार्थकता .05 के स्तर पर 1.97

शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राओं के समायोजन के मध्यमान क्रमशः 18.25 तथा 15.35 प्राप्त हुये है। तथा टी–मान 5.27 प्राप्त हुआ है। जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया है। समायोजन घटक के टी–मान क्रमशः 2. 06, 1.28 तथा 2.37 प्राप्त हुये है जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। घटक संवेदना, सामाजिक तथा शैक्षिक के टी के मान क्रमशः 3.05, 5.68 एवं 4.11 प्राप्त हुये है जो कि . 05 स्तर पर सार्थक है। अतः समायोजन के मध्यमानों का . 05 स्तर पर अंतर सार्थक पाया गया है। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है। अतः हम कह सकते है। शहरी परिवेश के छात्र शहरी छात्राओं से अधिक समायोजन क्षमता रखते हे। अतः शून्य परिकल्पना निरस्त की जाती है।

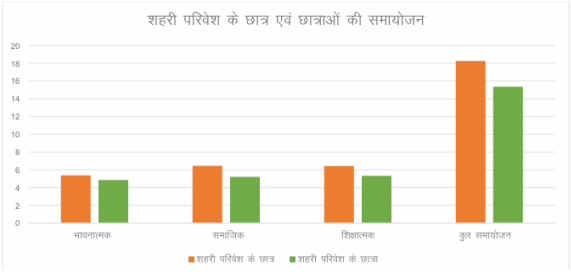

रेखा चित्र क्रमांक 2. शहरी परिवेश के छात्र एवं छात्राओं के कुल समायोजनशीलता का विश्लेषण

 ISSN: 2582-8150

(3) ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के समग्र विद्यार्थियो के समायोजन में सार्थक अंतर नहीं है।

तालिकाक्र.सं. 3: ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के समग्र विद्यार्थियो के समायोजन में सार्थक के टी–मान का विश्लेषण

समायोजन घटक	ग्रामीण कुल विद्यार्थी छात्र 100		शहरी कुल विद्यार्थी छात्र 300		मानक त्रुटि	टी–मान	पी–मूल्य और महत्व स्तर
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन			
भावनात्मक	5.19	1.54	5.14	1.52	.173	.289	N.S
समाजिक	5.54	1.67	5.89	2.13	.204	1.71	N.S
शिक्षात्मक	5.55	1.96	5.92	2.54	.042	1.57	N.S
कुल समायोजन	16.20	4.98	16.97	5.27	.583	1.16	N.S

स्वतंत्रता के अंश–398, सार्थकता 05 के स्तर पर 1.97

सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है, कि, ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमान क्रमशः 16. 29 तथा 16.97 प्राप्त हुये है। तथा टी का मान 1.16 प्राप्त हुआ है। जो .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। जो . 05 सार्थकता स्तरपर सार्थक नही हो तथा समायोजन के घटक के टी–मान क्रमशः .28, 1.71 तथा 1.57 प्राप्त हुये जो कि .05 स्तर असार्थक है। अर्थात मध्यमानों के अंतर . 05 पर सार्थक नहीं पाये गये है। अर्थात शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। अतः हम कह सकते है कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के अंतर नहीं पाया गया है। लगभग समान रूप से समायोजन शील पाऐ गऐ हे। परिवेश का उनके समायोजन पर प्रभाव नहीं पाया गया है।

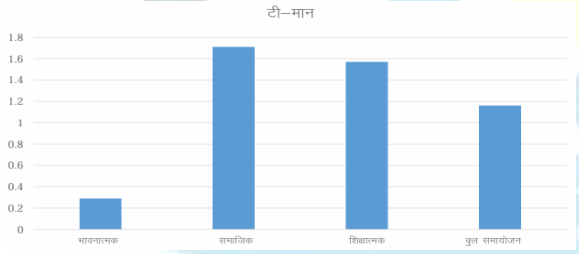

रेखा चित्र क्रमांक 3: ग्रामीण एवं शहरी परिवेश समग्र विद्यार्थियों के कुल समायोजनशीलता के टी का मान का विश्लेषण

ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी (छात्र बनाम छात्राएँ)

- कुल क्षमता स्तरः ग्रामीण छात्राओं की औसत क्षमता 17.42 पाई गई, जो छात्रों (15.47) से अधिक थी ($t = 2.19$, $p < 0.05$)।
- सकारात्मकता और शैक्षिक क्षमताः ग्रामीण छात्राओं का प्रदर्शन छात्रों से बेहतर था।

शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी (छात्र बनाम छात्राएँ)

- कुल क्षमता स्तरः शहरी छात्राओं का औसत क्षमता स्तर 18.25 था, जो छात्रों (15.35) से अधिक पाया गया ($t = 5.27$, $p < 0.05$)।
- सकारात्मकता, सामाजिकता और शैक्षिक क्षमताः शहरी छात्राओं का प्रदर्शन सभी क्षेत्रों में छात्रों से बेहतर पाया गया।

ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों का संयुक्त विश्लेषण

कुल क्षमता स्तर में कोई विशेष अंतर नहीं पाया गया ($t = 1.16$, $p > 0.05$)।

5. निष्कर्ष

अध्ययन के निष्कर्षों से यह स्पष्ट है कि:

छात्राओं का प्रदर्शन छात्रों से बेहतर रहा, विशेषकर शहरी क्षेत्रों में। ग्रामीण और शहरी विद्यार्थियों की कुल क्षमता में कोई स्पष्ट अंतर नहीं पाया गया। शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि क्या ग्रामीण और शहरी परिवेश विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक और सामाजिक क्षमताओं पर प्रभाव डालते हैं, और क्या लिंग आधारित अंतर इस प्रभाव को प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन शिक्षा प्रणाली में सुधार और नीतियों के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान कर सकता है।

सन्दर्भ

[1] Wang, Y. (2017). "Urban vs. Rural Education: An Examination of Cognitive Skills."
[2] Saxena, A., & Chaturvedi, A. (2018). "Gender Differences in Cognitive Skills Among School Children."
[3] Singh, R. (2016). "The Impact of Socio-Economic Status on Student Achievement in Rural and Urban Areas."
[4] Kumar, S., & Sharma, P. (2019). "Comparative Analysis of Urban and Rural Students' Emotional and Social Skills."
[5] Joshi, V. (2020). "Cognitive Development in Different Environments: A Gender Perspective."
[6] Choudhary, N., & Verma, R. (2021). "Educational Outcomes in Rural vs Urban Contexts: A Meta-Analysis."